दृष्टि

समीर उपाध्याय ललित

एक पाठशाला की चिंतन शिविर में आचार्य अपने शिक्षकों से- “हमारे छात्रों में अनंत शक्तियां छिपी हुई हैं। उन्हें पहचान कर विकसित करने की जिम्मेदारी आप सब की है।“

पाठशाला से वय मर्यादा के कारण निवृत्त हो रहे मनोज कुमार बोले- “बड़े साहब, शिक्षक भी पाठशाला का एक हिस्सा होता है। उसमें भी अनंत शक्तियां छिपी हुई होती हैं। उन्हें प्रोत्साहित करने की जिम्मेदारी किसकी है? ज़रा विस्तार से समझाइए।“

आचार्य- “आप कहना क्या चाहते हैं?”

मनोज कुमार- “बड़े साहब, आप तो वाणिज्य के शिक्षक है। वाणिज्य में स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि कार्य कुशल कर्मचारी संस्था की अमूल्य धरोहर के समान होते हैं।“

आचार्य- “संस्था में कार्यकुशलता सिद्ध करने वाले कर्मचारी भी होने चाहिए न?”

मनोज कुमार- “क्या आपको एक भी शिक्षक कार्य कुशल नहीं दिखाई देता? क्या आपने काले चश्मे पहन रखे हैं? हमारी पाठशाला के कार्य-कुशल हिंदी शिक्षक पवन कुमार के दो लघुकथा-संग्रह प्रकाशित हुएं हैं। शहर की दो बड़ी संस्थाओं ने उनका अभिनंदन भी किया है। चिंतन शिविर में आप तो उनके लिए दो मीठे शब्द भी नहीं बोल पाए?”

आचार्य- “साफ-साफ बताइए आप कहना क्या चाहते हैं?”

मनोज कुमार- "यही कि जैसी अपेक्षा आप अपने शिक्षकों से रखते हैं वैसी ही अपेक्षा आपके शिक्षकों को आपसे भी है। शिक्षकों के सामर्थ्य और शक्तियों को परख कर उन्हें प्रोत्साहित करने की जिम्मेदारी आपकी है। लेकिन आज़ तक आपने.....?"

आचार्य- "तो क्या आप यह कहना चाहते हैं कि मुझ में शिक्षकों के सामर्थ्य को पहचाने की दृष्टि नहीं है?"

मनोज कुमार- "हां बिल्कुल, आपने अपने मुंह से ही कह दिया कि आपमें शिक्षकों के सामर्थ्य को पहचानने की दृष्टि नहीं है। वास्तव में आपने काले चश्मे पहन रखे हैं। आपको आंखों से कुछ नहीं दिखाई देता। आप सिर्फ़ अपने चमचों की बातें सुनते हैं और उसी के आधार पर बिना सोचे-समझे निर्णय लेते हैं।"

आचार्य- "आपने तो मुझे दृष्टिहीन ही घोषित कर दिया!"

मनोज कुमार- "बड़े साहब, संस्था में कुछ कर्मचारी ऐसे होते हैं जिनमें काम करने की क्षमता होती है, लेकिन नियत नहीं होती। कुछ कर्मचारी ऐसे होते हैं जिनमें काम करने की नियत होती है, लेकिन क्षमता नहीं होती। कुछ कर्मचारी ऐसे भी होते हैं जिनमें क्षमता और नियत दोनों होते हैं, लेकिन अफ़सोस की बात यह है कि उनके अधिकारी के पास जोहरी जैसी दृष्टि नहीं होती कि वे कोयले की खान के हीरे को परख सकें।"

मनोज कुमार के मुंह से कटु सत्य सुनकर आचार्य चिंतन शिविर से खड़े होकर बाहर निकल गए और अपने ऑफिस में जाकर चिंतन करने के लिए विवश हो गया!